गिरनार
दर्शन यात्रा

गिरनार की महिमा न्यारी...

दीक्षाकेवलं निवृति कल्याणत्रिकमनंततीर्थकृतां ।
युगपदथैकमभवन्, स जयति गिरनारगिरिराजः ॥

(श्री गिरनार महातीर्थकल्प-श्लोक-४)

जहाँ अनंते तीर्थंकर भगवंतों की दीक्षा, केवलज्ञान एवं मोक्ष इस प्रकार तीन कल्याणक एक साथ हुए है और अनंते तीर्थंकर का मोक्षकल्याणक हुआ है उस गिरनार गिरिराज की जय हो ।

स्वर्भूभूवस्थ चैत्ये वस्याकारं सुरासुरनरेशाः ।
सं पूजयन्ति सततं, स जयति गिरनार गिरिराजः ॥

(श्री गिरनार महातीर्थकल्प-श्लोक-५)

स्वर्गलोक, पाताललोक और मृत्युलोक के चैत्यों में सुर, असुर और राजाओं जिसके आकार को हंमेशा पूजते हैं उस गिरनार गिरिराज की जय हो ।

अन्यस्था अपि भविनो, यद्ध्यानाद् घातिकर्ममलमुक्तः ।
सेत्स्यंति भवचतुष्के, स जयति गिरनार गिरिराजः ॥

(श्री गिरनार महातीर्थकल्प-श्लोक-१९)

दूसरे स्थानों में स्थित (अर्थात् गिरनार से दूर घर-दुकान-देश-विदेश कोई भी स्थान में बसे हुए) जो भव्यजीव गिरनार का ध्यान धरते हैं वे जीव घातीकर्म का मल दूर करके चार भव में मोक्ष प्राप्त करते हैं, उस गिरनार गिरिराज की जय हो ।

अन्यत्रापि स्थितः प्राणी, ध्यायन्नेनं गिरीश्वरम् ।
आगामिनि भवे भावी, चतुर्थे किल केवली ॥

(वस्तुपाळचरित्र-प्रस्ताव-५, श्लोक-८५)

अन्य स्थान में (गिरनार के अलावा) रहे हुए जीव इस गिरनार गिरीश्वर का ध्यान धरे तो वह आगामी चार भव में केवलज्ञान पाकर मोक्षपद को प्राप्त करते हैं ।

महातीर्थमिदं तेन, सर्वपापहरंस्मृतम् । शत्रुंजयगिरेस्य, वन्दने सदृश फलम् ॥
विधिनास्य सुतीर्थस्य, सिद्धान्तोक्तेन भावतः । एकशोऽपिकृता यात्रा, दत्ते मुक्तिं भवान्तरात् ॥ (वस्तुपाळचरित्र-प्रस्ताव-५, श्लोक-८०/८१)

गिरनार की महिमा अनेरी होने से इस गिरिवर को सर्व पाप को हरण करनेवाला कहा गया है और शत्रुंजय एवं गिरनार को वंदन करने में दोनों का समान फल कहा गया है ।

इस गिरनार महातीर्थ की शास्त्रानुसार भावपूर्वक एक भी यात्रा की जाए तो वह भवांतर में मुक्तिपद को देनेवाली बनती है ।

गिरनार तीर्थ की साल में कम से कम एक यात्रा करने का संकल्प अवश्य करें ।

गिरनार दर्शनयात्रा

-: संकलन :-

युगप्रधान आचार्यसम प.पू.पंन्यास **श्री चन्द्रशेखरविजयजी गणिवर्य** के शिष्य
प.पू.आचार्य **श्री धर्मरक्षितसूरीश्वरजी म.सा.** के शिष्य प.पू.आचार्य **श्री हेमवल्लभसूरीश्वरजी म.सा.**

प्रकाशक : गिरनार महातीर्थविकास समिति

गौरवशाली गिरनारदर्शन धर्मशाला, रुपायतन रोड, मीनराज स्कुल के सामने, भवनाथ तलेटी,
जूनागढ़ - ३६२००१. फोन : ०२८५-२६५७०९९/१९९, मो. : ९४०९६८५९९९

E-mail : girnarbhakti@gmail.com

Web : www.girnarbhakti.com • www.girnarmahatirth.org • www.girnarjaintirth.com • www.girnardarshan.com

प्रथम आवृत्ति : ३००० नकल

श्री नेमिनाथ मोक्षकल्याणक दिन
वि.सं. २०७३, अषाढ सुद ८

किंमत : रू. ५०/-

गौरवशाली गिरनारदर्शन धर्मशाला, जूनागढ़
फोन : ०२८५-२६५७०९९/१९९
मो. : ९४०९६८५९९९

वर्धमान संस्कारधाम, ओपेरा हाउस, मुंबई.
फोन : ०२२-२३६८०९७४

• प्राप्ति स्थान •

आगम बुक डेपो, भावनगर.
मो. : ९४२७१४५१९९,
९४२६२५५५२० (जयेशभाई)

भगीरथ इलेक्ट्रोनीक्स, अहमदाबाद.
फोन : ०७९-२७५४६२३८.
मो. : ९८२५२८८९९१ (भगीरथभाई)

समकित ग्रुप, गोरेगांव (मुंबई)
मो. : ९८२१३२७३८८

धन धन श्री गिरनारने रे, तार्या अरिहा अनंत सलूणा;
ए गिरिवरने फरसता रे, आतम निर्मल थाय सलूणा...

गिरनार के शिखर पर दादा श्री नेमिनाथ, गिरनार की तलेटी पर दादा श्री आदिनाथ...

સોરઠ દેશમાં સંચર્યો, ન ચઢ્યો ગઢગિરનાર;
સહસાવન ફરસ્યો નહીં, એનો એળે ગયો અવતાર.
દીક્ષાકલ્યાણકભૂમિ
સહસાવન
કેવલજ્ઞાનકલ્યાણકભૂમિ
સહસાવન
જય તળેટી
सिद्धभूमि गिरनार की पवित्र पुण्यधरा जय तलेटी !

साधना तीर्थ का मंगल द्वार... प्रभु नेमि के प्रेम का प्रवेश द्वार...

पैदल पैदल चलना... प्रभु के चरणों की पावन स्पर्शना...
माँ अंबिका ! हमें इस यात्रा में सहाय करना !

वंदन यह सोपानश्रेणि को...
परमात्म दर्शन का आनंद दिया...
कलिकाल में यह तरणतारण,
गिरनार गिरिवर धन्य है...

श्रमित को शाता देता
यह विश्राम का
स्थान है,
यह शाता के साथ नेमिनाथ
का आस्था स्थान है ।

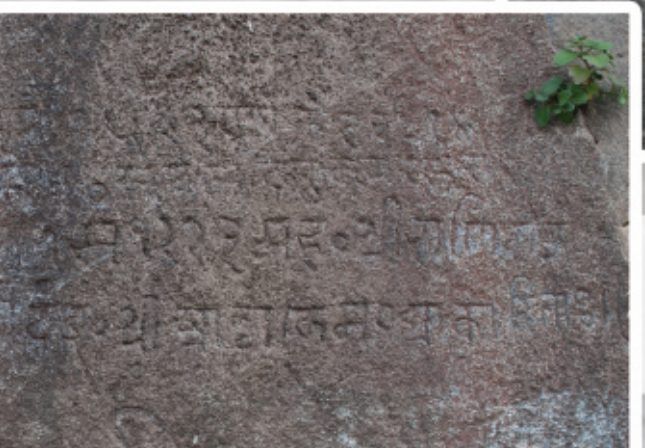

गिरनार गिरि पर पगथार की
प्रतिष्ठा एवं पालन करनेवाले गिरनारप्रेमी
पुण्यप्रभावकों के **शिलालेख...**

अंदर बैठे दादा अंतर में पधारो !
(लगभग २७५० पगथिये)

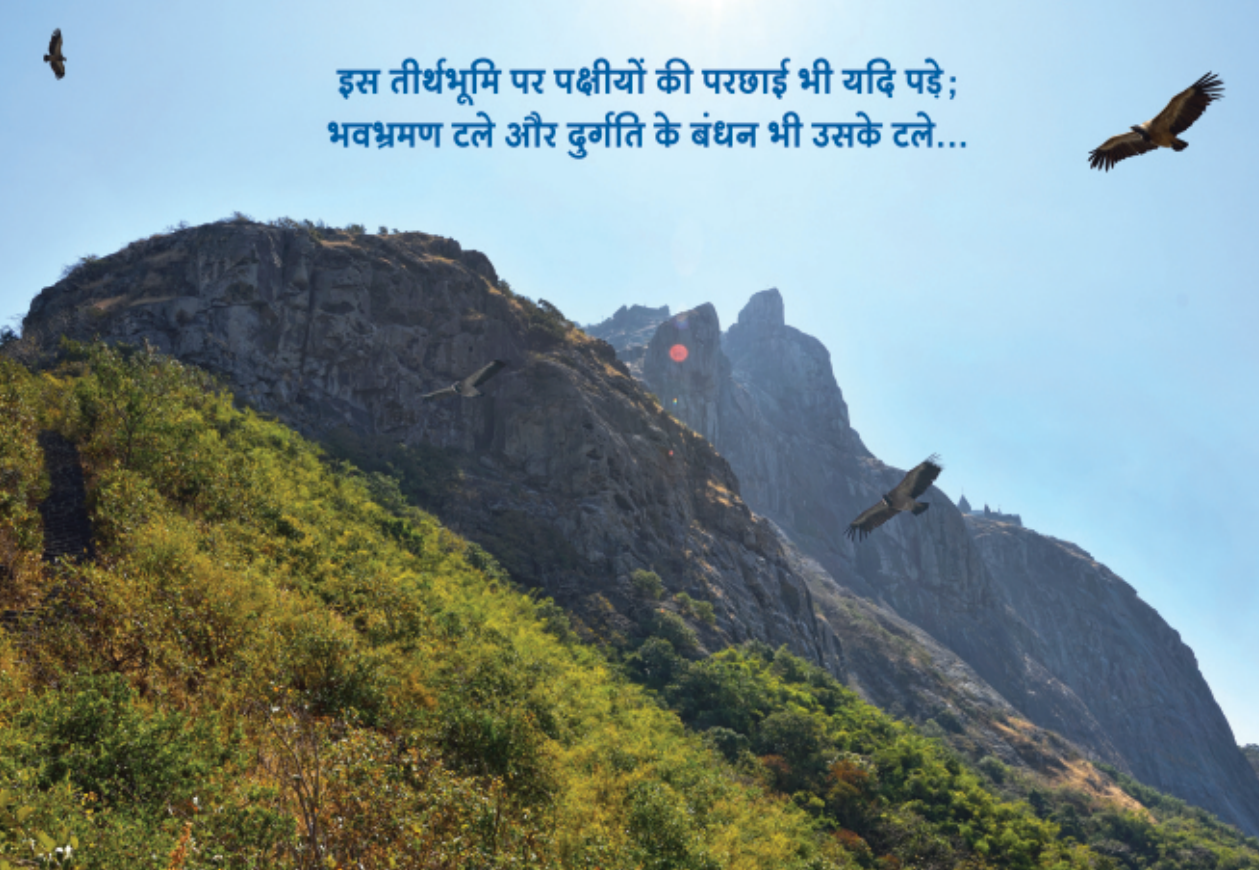
इस तीर्थभूमि पर पक्षीयों की परछाई भी यदि पड़े;
भवभ्रमण टले और दुर्गति के बंधन भी उसके टले...

पत्थरों पर गिरनार के पुरातन समय का
प्रत्यक्ष प्रमाण !...

इस झरोखे के गवाक्ष से
अभिव्यक्त होता है
मिलन का मंगलनाद !

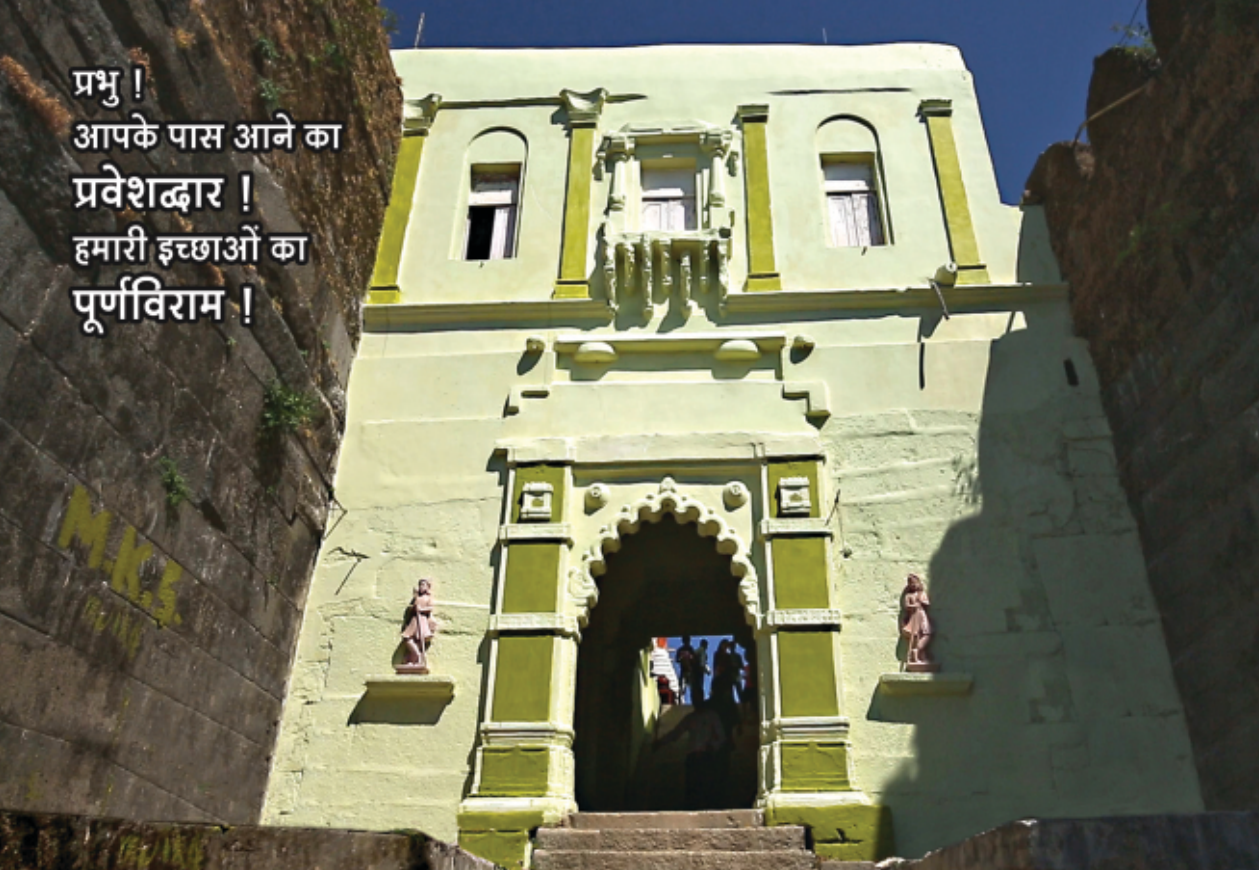
प्रभु !
आपके पास आने का
प्रवेशद्वार !
हमारी इच्छाओं का
पूर्णविराम !

प्रभु !
आपके परिसर में
मिला प्रवेश...
दूर होगा मेरा
अंतर का क्लेश...

कर्णविहार प्रासाद की भव्यता का जीवंत प्रसारण...

हे जगदंबा माता अंबिका !
प्रभुजीवी आत्माओं की
आप हेल्पलाईन हो...
आपके उपकार कैसे भूलें...

वीतरागता सहजता से प्राप्त हो ऐसा प्रदेश याने दादा का मुख्य रंगमंडप !
भक्ति की भव्यता को प्राप्त करें...

मेरे चित्त में, मेरे वित्त में...
नेमिनाथ तुम... नेमिनाथ तुम...
मेरी दृष्टि में, मेरी शक्ति में,
नेमिनाथ तुम... नेमिनाथ तुम...
मेरे प्राण में... मेरे श्वास में,
नेमिनाथ तुम... नेमिनाथ तुम...
भाव से करे वंदना...

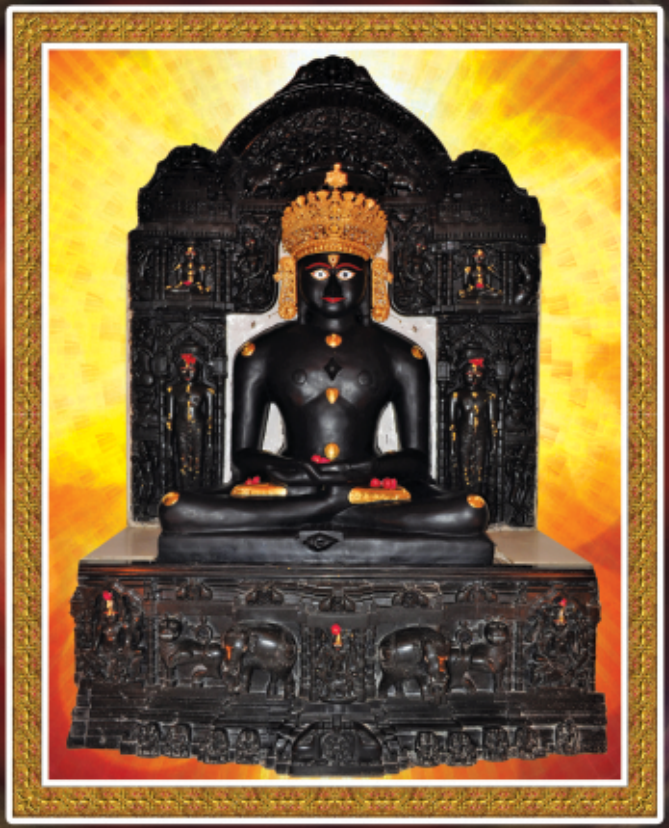

कलिकाल सर्वज्ञ पू. आचार्य श्री हेमचन्द्रसूरिजी एवं परम गुरुभक्त कुमारपाल महाराजा

प्रभु वीर ! तेरे चरण की शरण ग्रहुं...

आदि जिणंद दयाल हो...
मोहे लागी लगनवा...
कर्ण विहार की परछाईं में परिप्लावित
श्री आदिजिनेश्वर का देवालय...

देरी में शोभे प्रभु के चरण,
मिला नेमिनाथ का शरण...
होगा भवसंसार से निस्तरण...

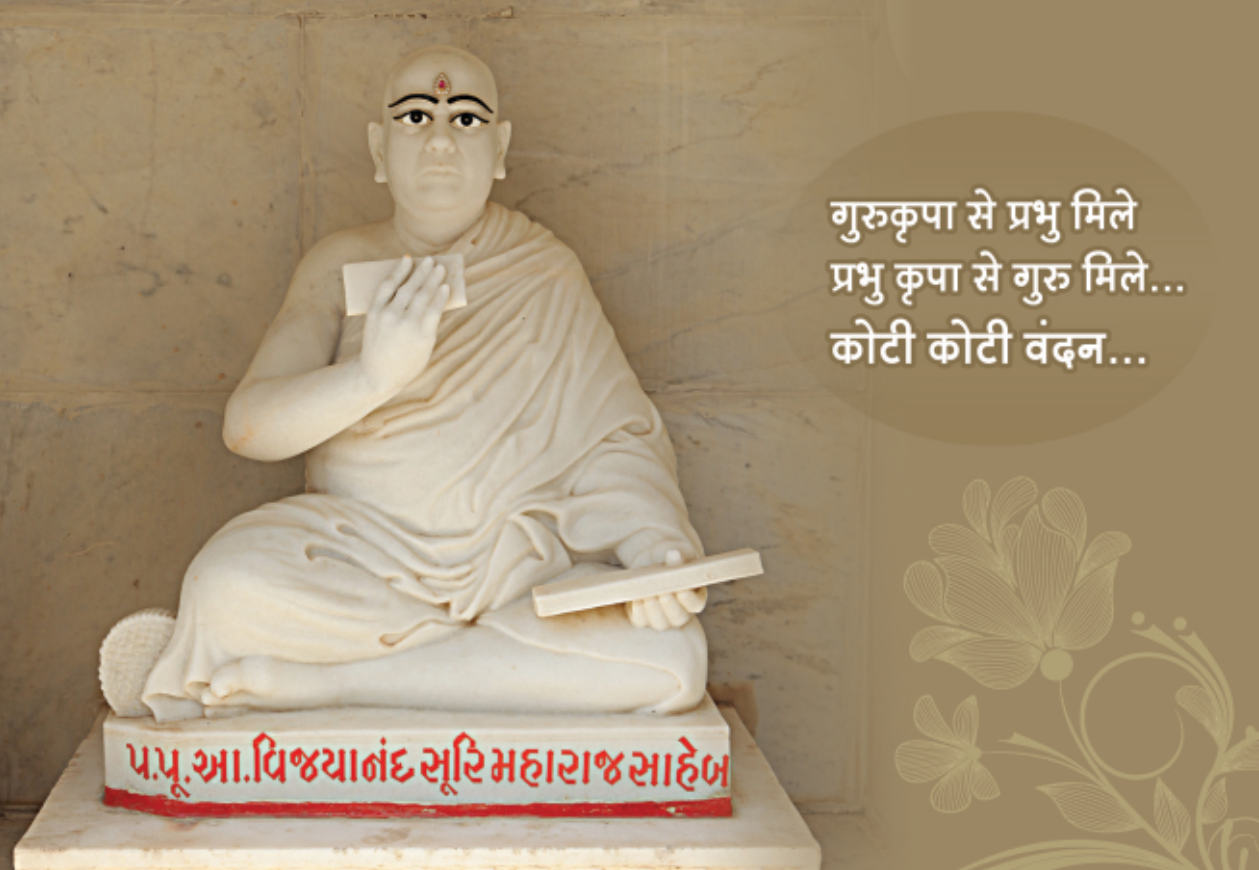

गुरुकृपा से प्रभु मिले
प्रभु कृपा से गुरु मिले...
कोटी कोटी वंदन...

भक्ति के भावसभर प्रदेश का प्रवेशद्धार... प्रभु के दरबार का स्नात्रमंडप...

नंदीश्वरजी तीर्थ की भव्यता को
प्रगट करता नंदीश्वर द्वीप तीर्थपट्ट !

वर्तमान चौबीशी के २० तीर्थंकर परमात्मा
की निर्वाणभूमि श्री सम्मेतशिखरजी तीर्थपट्ट !

दर्शन तेरा पावनकारी...
आँखें तेरी करुणा की क्यारी...
आप प्रभु दुरितहरा
नाम है पार्श्व अमीझरा...

अमीझरा पार्श्वजिन को वंदन...

सम्यक्त्व की सरगम सुनाते

पुण्यवंत श्रावकों का मनोहारी सर्जन...

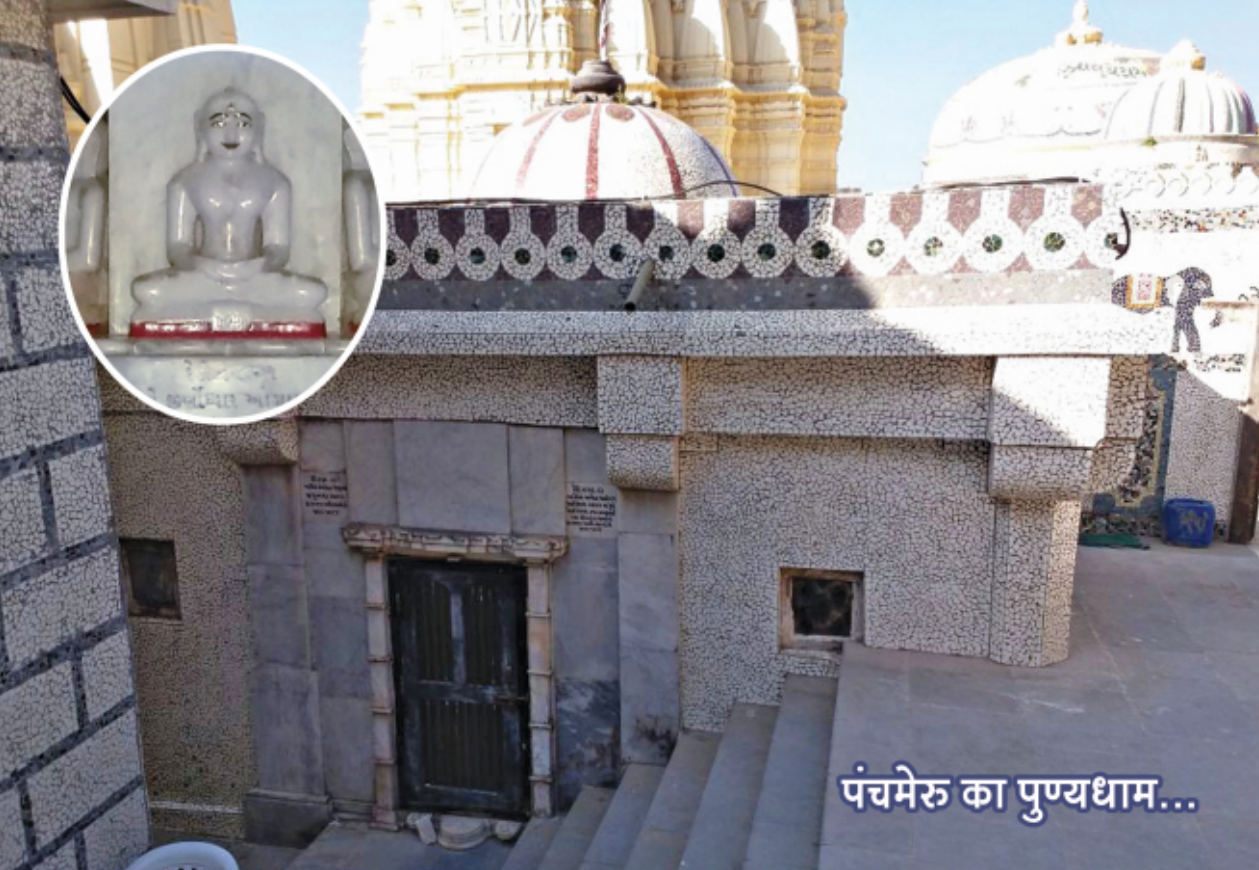
पंचमेरु का पुण्यधाम...

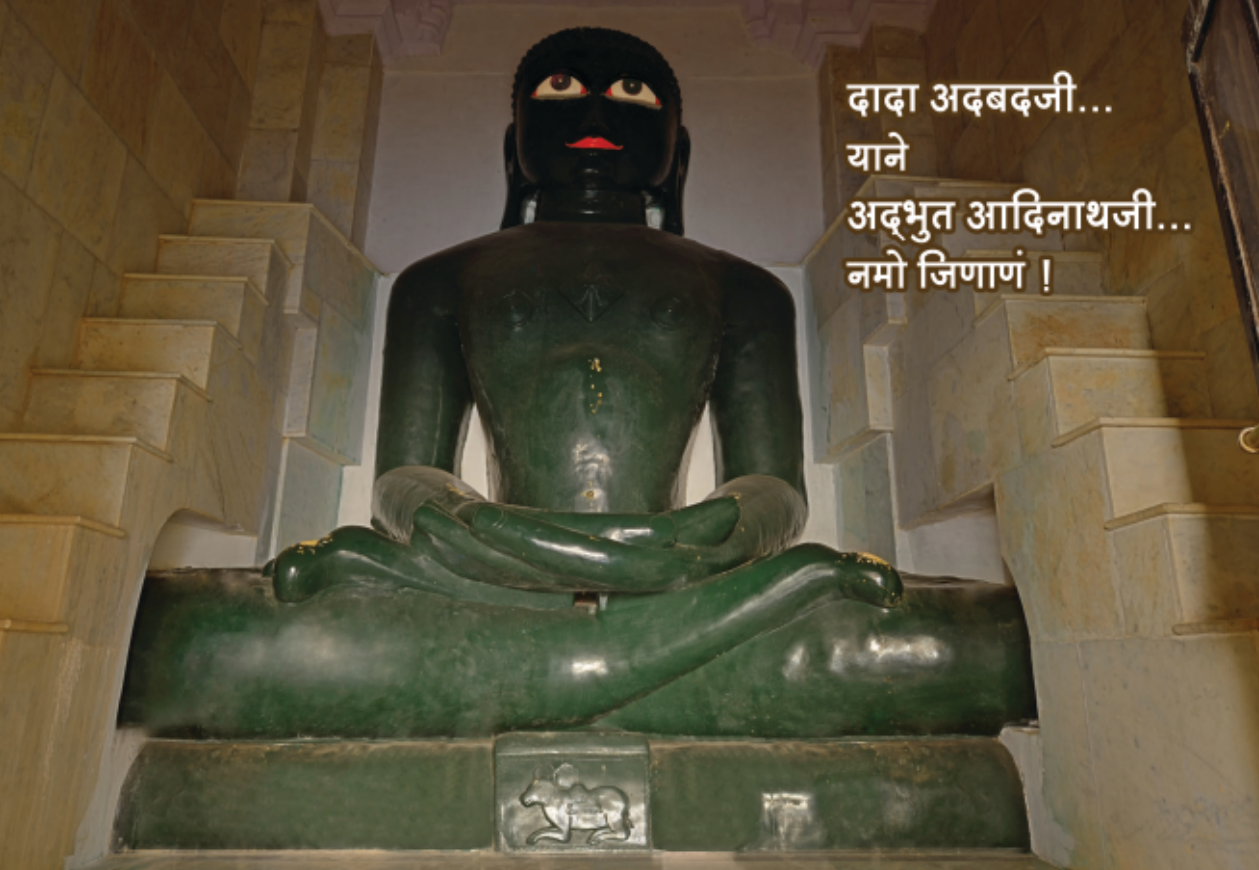
दादा अदबदजी...
याने
अद्‌भुत आदिनाथजी...
नमो जिणाणं !

विशाल रंगमंडप... मेरकवसही जिनालय का...

मानो प्रभु के साथ प्रीति का संगम...

रोमन शैली की आधुनिक मुखाकृतियों में झलकता

पंचांगवीर एवं विष्णुगोपलीला का मनोहारी दृश्य...

आदीश्वर भगवान के निर्वाण से पुण्यवंत बना अष्टापदतीर्थ...
गिरनार गिरिवर पर भी अष्टापद है !

प्रभु
आपका बदलता
रुप...
दर्शन करके बदले
स्वरुप...

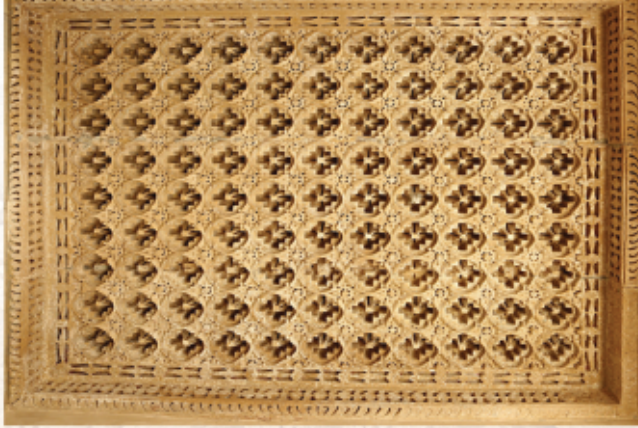

पत्थर पर फूल खिले हों...
कला की ऐसी अभिव्यक्ति को
व्यक्त करानेवाले
आत्मा को कोटि कोटि वंदन...

संग्राम सोनी द्वारा
निर्मित भव्य जिनालय
का मधुर दर्शन..
''नमो जिणाणं''

मंझिलयुक्त रंगमंडप... भक्तिभाव का सूरमंडप...

वह माता भी वंदनीय है...
जिन्होंने जगत्पिता
की भेंट दी..
(चौबीस जिनमाता का पट्ट)

सुरलोकवासी जीवों का
भक्तिक्षेत्र याने
नंदीश्वरद्वीप...

गुर्जरश्वर कुमारपाल द्वारा निर्मित भव्यातिभव्य जिनालय की झलक...
अभिनंदन स्वामी परमात्मा को कोटी कोटी वंदन...

यहाँ पत्थर पर भी फूल जैसी कलाओं का अंजन किया है...
नजर सबकी पड़े, पर नजर किसी की ना लगे...

श्रेष्ठी भीमा साथरीया द्वारा निर्मित
मनोहारी भीमकुंड...

हे चन्द्रप्रभ स्वामी...
हमारे अंतर को प्रकाशित करो...

दिव्य देवांगनाये
जहाँ प्रभुभक्ति करें
वह भक्तिमंडप...

त्रिभुवन की श्रेष्ठ सरिताओं का सुनहरा संगम... याने गजपदकुंड !

इन्द्र द्वारा निर्मित इस कुंड के प्रभाव से रोग-शोक-दुःख-दोषादि पीड़ा दूर होती है...

असंभव सा लगे जो कार्य...
दादा संभवनाथ की कृपा
से हो जाए संभव...
संभवनाथ दादा को
नमो जिणाणं...

श्रमित डोलीवालों को शाता देता

यह गिरनार का सुरजकुंड है...

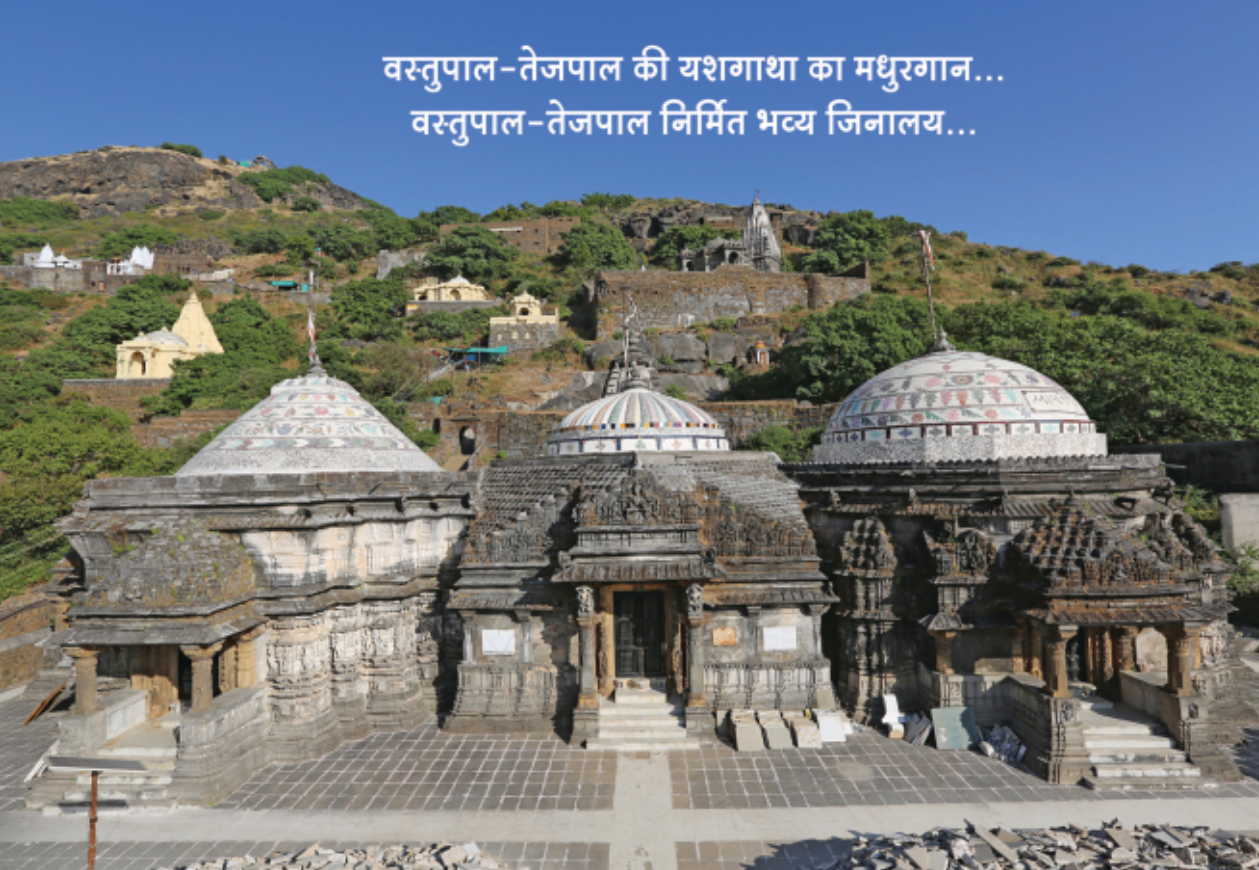
वस्तुपाल-तेजपाल की यशगाथा का मधुरगान...
वस्तुपाल-तेजपाल निर्मित भव्य जिनालय...

प्रवेश करते ही प्रभु के हो जाए...

ऐसी निरव शांति का स्थान... शामला पार्श्वनाथ प्रभु का जिनालय...

समवसरण स्थापना तीर्थ...
प्रभु के उत्कृष्ट उपकार का केन्द्रबिंदु... वंदन... वंदन... वंदन...

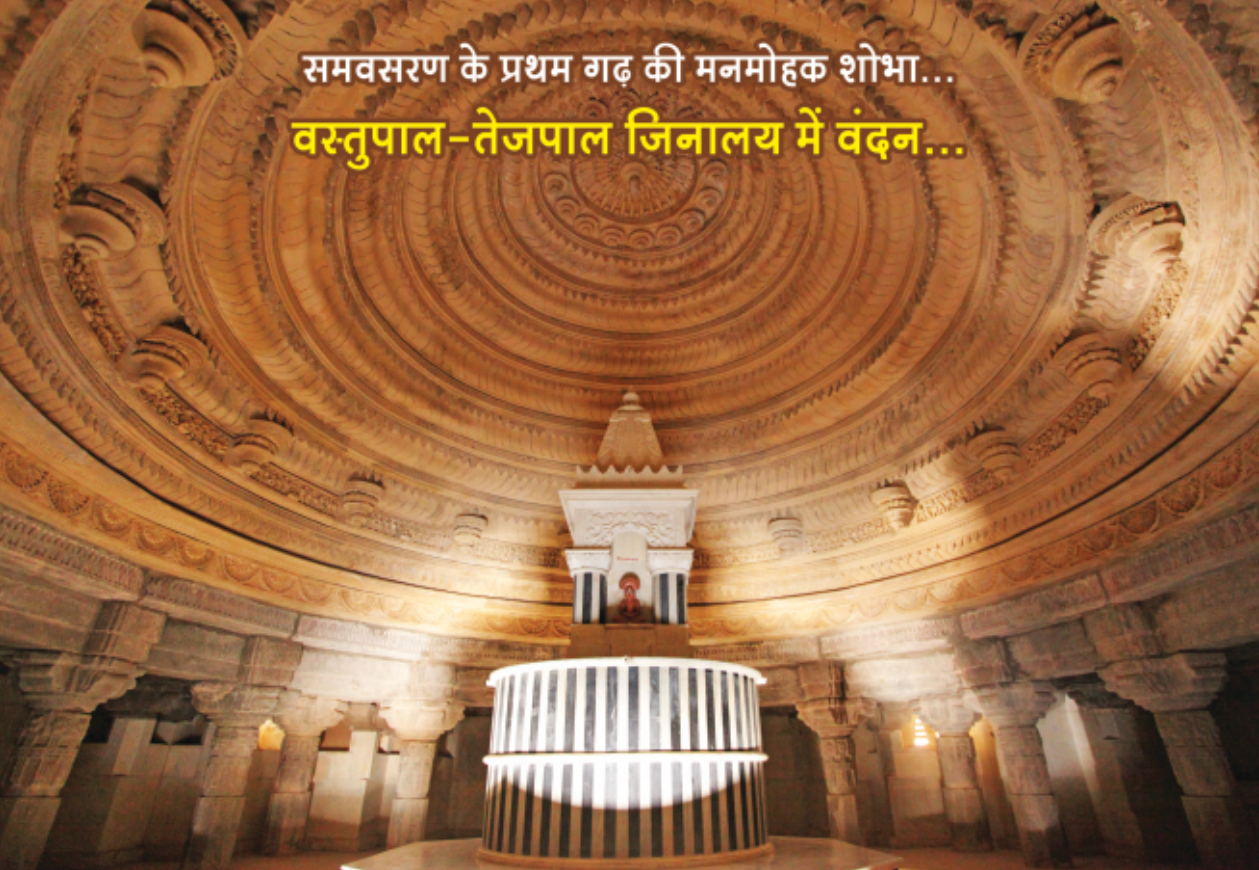
समवसरण के प्रथम गढ़ की मनमोहक शोभा...
वस्तुपाल-तेजपाल जिनालय में वंदन...

यहाँ पत्थरों को वाचा मिली है... कला के स्वरुप में...
कभी भी कल्पना नहीं कर सकते... वस्तुपाल का जिनालय...

गुमास्ता का जिनालय...
हे संभव प्रभु ! मेरे आत्मगुणों को उजागर करो !

पुण्यानुबंधी पुण्य का नियतानुबंध याने

संप्रति महाराजा द्वारा निर्मित जिनालय...

कला की अधिष्ठायिका के अधिष्ठान सम जिनालय के
रंगमंडप की कलात्मक छत...

समय की कुछ पल यहाँ समर्पित कर चलें... ऐसी कला समृद्धि और कहाँ ?

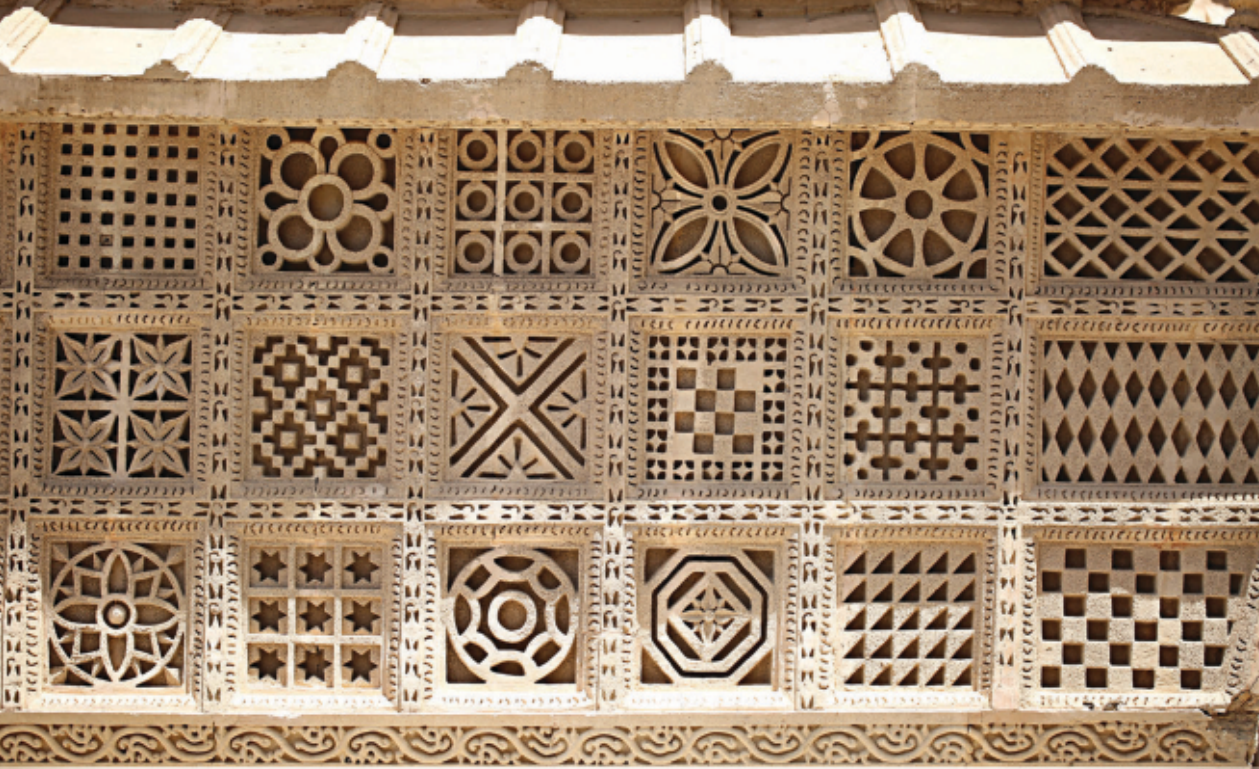

कलात्मक झरोंखे एवं जाली की संरचना संसार को भूला देती है...

हे शारदे माँ !
हे शारदे माँ !
अज्ञानता से हमें तार दे माँ !

ज्ञानवाव के समीप मनभावक जिनालय

मूलनायक संभवनाथ दादा...

श्रेष्ठि धरमशी हेमराज द्वारा
निर्मित प्रभु का जिनालय
शांतिनाथ दादा को
वंदन... वंदन... वंदन...

श्रेष्ठि जोरावरमलजी ने
इस जिनालय का जीर्णोद्धार करवाया...
हार्दिक वंदन... उनकी श्रद्धा
और प्रभु भक्ति को...

नेमिप्रभु प्रति
जिसके भवोभव के
प्रेम संबंध से
गिरनार गिरि
सुवासित बना
वह सती श्रेष्ठ
राजुल...

साधनाभूमि
संवेगी
मुनि प्रेमचंदजी
की गुफा

चौमुखजी जिनालय में बिराजमान **नेमिप्रभु**
चारगति के भ्रमण को दूर करो...

गौमुखी गंगा मंदिर में

२४ जिनेश्वर भगवंतो की

चरण पादुका को नमो जिणाणं...

नेमिजिन समीप व्रतग्रहण कर साधना करके
परमात्मास्वरुप प्राप्त किया
ऐसे रहनेमिजिन को वंदन...

अंबाजी टूंक में **शांबकुमार** की
चरण पादुका को अनंत अनंत वंदन...

पराक्रमी प्रद्युम्नकुमारजी
की चरण पादुका को
अगणित वंदन...

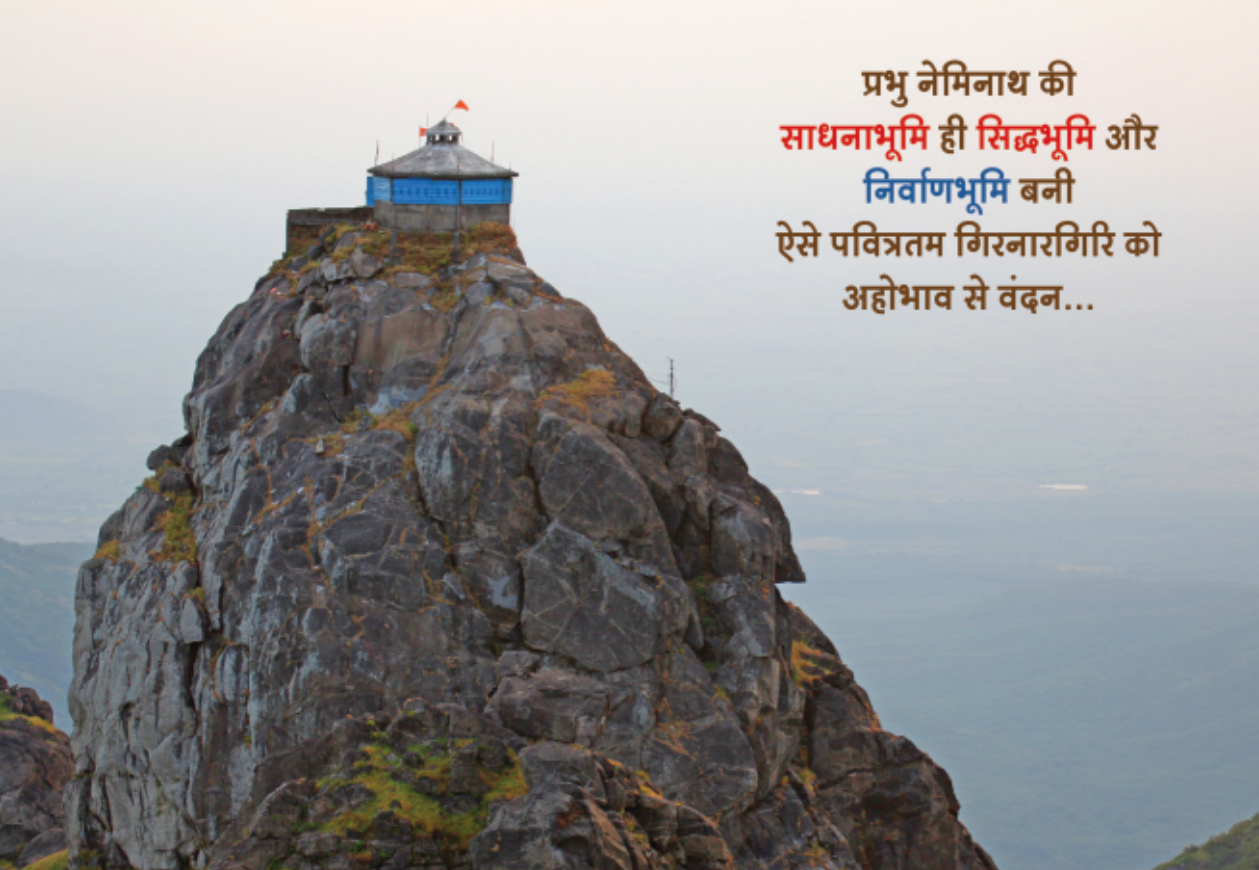

प्रभु नेमिनाथ की
साधनाभूमि ही सिद्धभूमि और
निर्वाणभूमि बनी
ऐसे पवित्रतम गिरनारगिरि को
अहोभाव से वंदन...

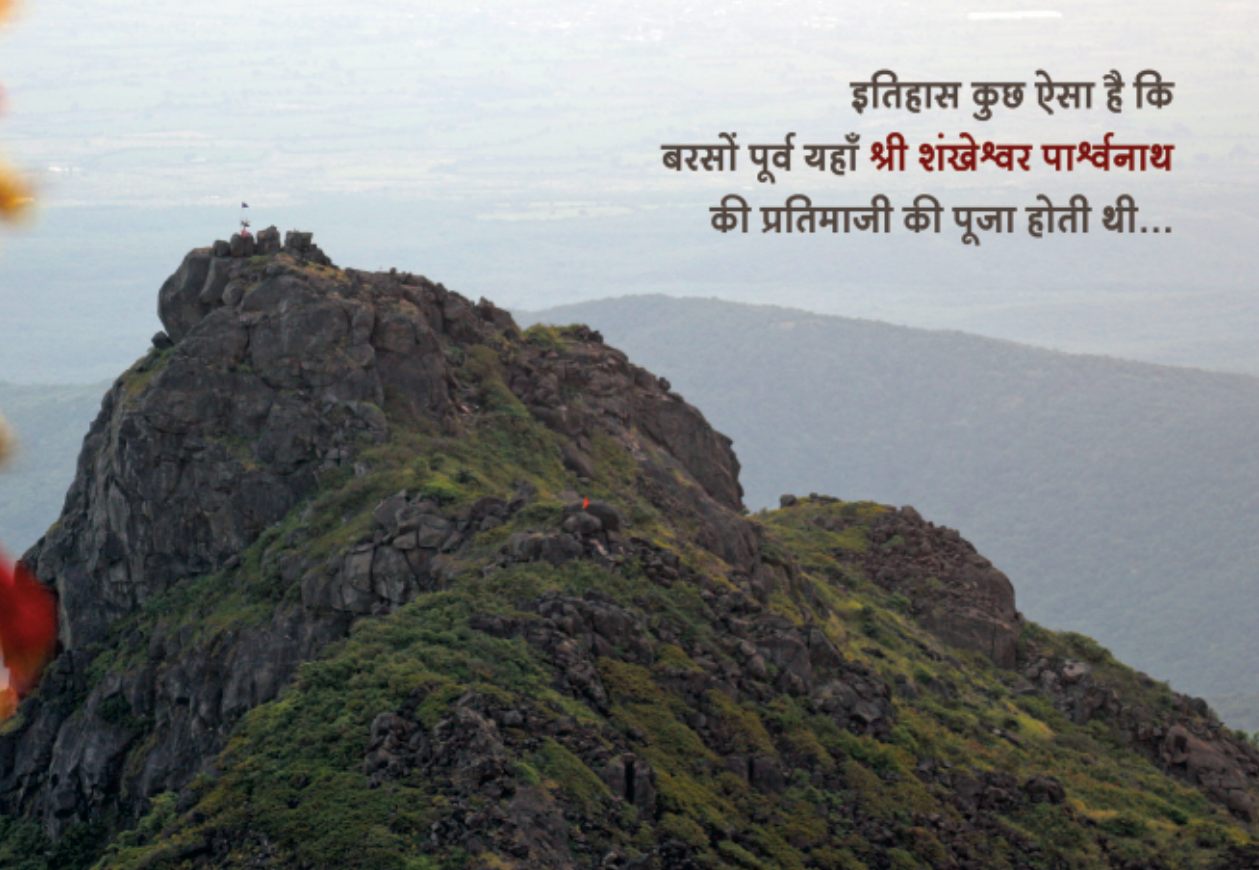
इतिहास कुछ ऐसा है कि
बरसों पूर्व यहाँ श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ
की प्रतिमाजी की पूजा होती थी...

गिरनार की अप्रतिम शोभा जिनसे बनी है,

उन चौदह - चौदह जिनालयों का भव्य विहंगावलोकन...

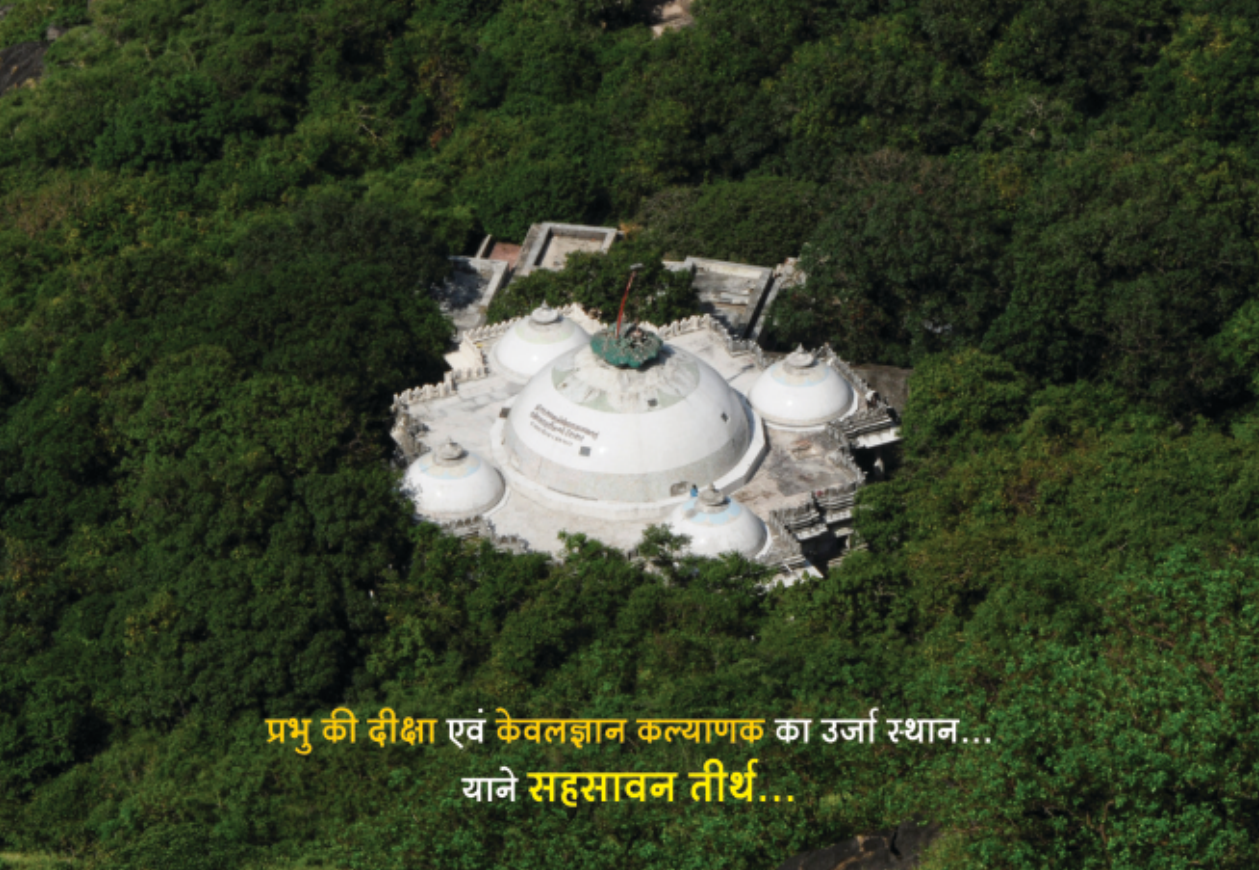

प्रभु की दीक्षा एवं केवलज्ञान कल्याणक का उर्जा स्थान...
याने **सहसावन तीर्थ...**

प्रभु समवसरण की
स्थापना याने...
प्रभु का
समवसरण जिनालय...

निरख्यो नेमि जिणंदने
अरिहंताजी...
जीवितस्वामी श्री नेमिनाथ
महाराजा को
अगणित वंदन...

वरदत्तादि
१८ गणधरों को
वंदन...
गुणग्राही बनने हेतु...
गणधरों को वंदन...

अनागत जिनवर यहाँ से पाएंगे शिवपुर धाम...
अतीत दस जिनवर ने यहाँ से पाया शिवपुर धाम...

समवसरण में बिराजमान
श्री नेमिप्रभु का
मनोहारी दर्शन...

समवसरण जिनालय की
शंख गुफा में
बिराजमान श्री नेमिप्रभु
को वंदन...

सुविशुद्ध जिनाज्ञा के पालक,
गिरनार तीर्थ (सहसावन) के
तीर्थोद्धारक, तपस्वीसम्राट
पू. आचार्यदेव
श्री हिमांशुसूरिजी को
वंदन... वंदन...

नेमिप्रभु के सर्वविरति ग्रहण
से पुनित बनी यह धरा...
दीक्षा कल्याणकभूमि
सहसावन तीर्थ

प्रभु नेमिजिन की
सर्वत्याग की गाथा
की महक आज भी
इस पादत्राण में से
फैल रही है...

केवलज्ञान प्रभु ने
पाया और
केवलज्ञान कल्याणक
का लाभ
इस पवित्र धराने
पाया !

वंदन... प्रभु के पुनित चरणों को...
वंदन... पुण्यधरा के कण कण को...

सप्त शिखरों का शृंगार गिरनार गिरिवर !

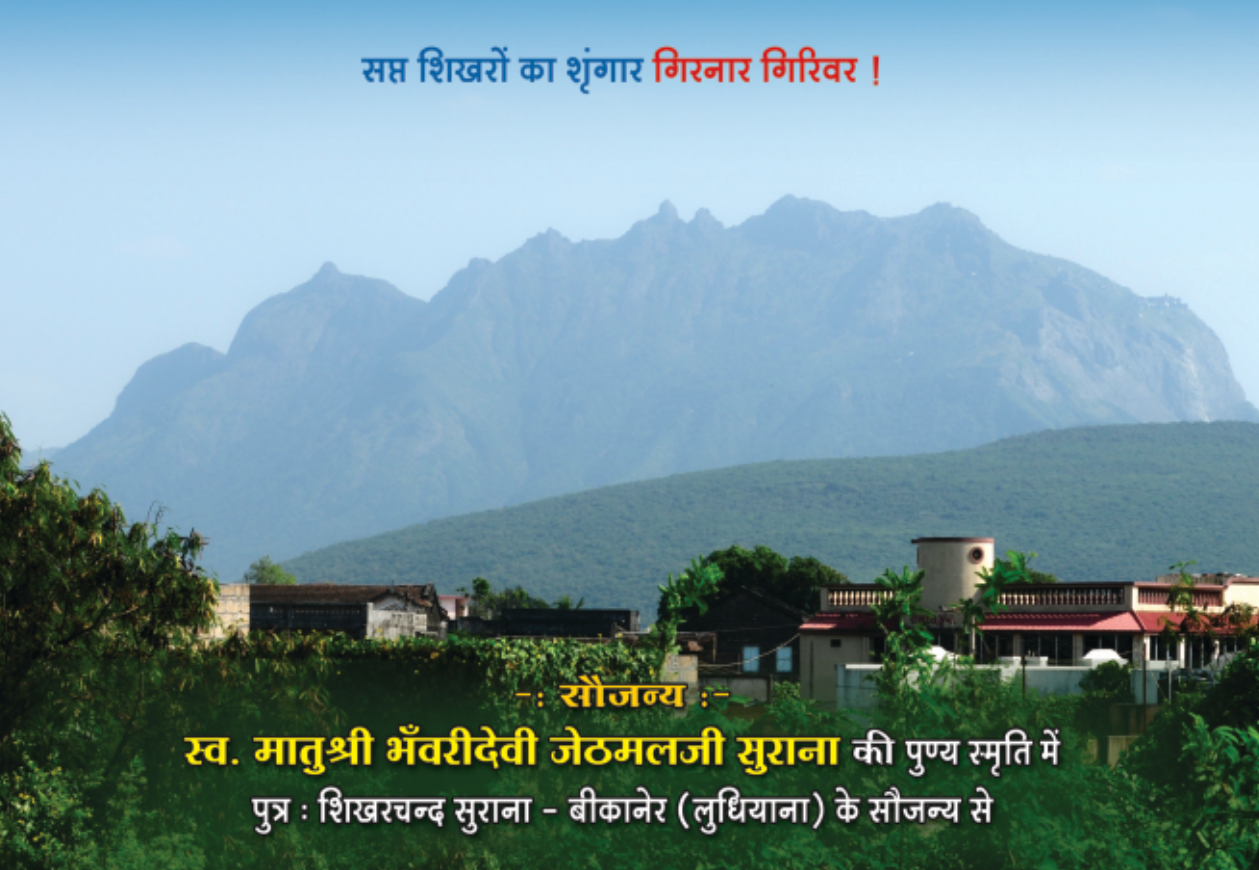

-: सौजन्य :-

स्व. मातुश्री भँवरीदेवी जेठमलजी सुराना की पुण्य स्मृति में

पुत्र : शिखरचन्द सुराना - बीकानेर (लुधियाना) के सौजन्य से

सहसावन जिनालय
Created by :
Kirit B. Vadecha
© 23737600 / 98200 73336